

## Result Mitra Daily Magazine

### भारत में सकारात्मक मानसून

#### हालिया सन्दर्भ -

- हाल ही में भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (IMD) ने गुरुवार, 27 जून को भारत में इस वर्ष मुख्य मानसून क्षेत्र के लिए सामान्य से अधिक बारिश की भविष्यवाणी की है।
- भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार इस मानसून सीजन में बारिश कुल दीर्घकालिक औसत (87 cm) का 106 प्रतिशत होने की उम्मीद है।
- मानसून की सामान्य से अधिक बारिश भारत में फसलों की सिंचाई, जलाशयों को भरने से लेकर देश की 3.5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था के लिए काफी महत्वपूर्ण है।

#### भारत में मानसून -

- मानसून मुख्य रूप से हिंद महासागर और अरब सागर की ओर से भारत के दक्षिण-पश्चिम तट पर आने वाली हवाओं को कहा जाता है जो भारत में जून से सितंबर तक भारी वर्षा कराती हैं।
- भारतीय मानसून को दो भागों में बांटा जाता है-

#### दक्षिण-पश्चिम मानसून और पूर्वोत्तर मानसून

#### दक्षिण-पश्चिम मानसून -

- आमतौर पर भारत में वर्षा ऋतु की शुरुआत दक्षिण-पश्चिम मानसून की शुरुआत के रूप में जाना जाता है।
- दक्षिण-पश्चिम मानसून का सीजन जून से सितंबर के बीच (4 महीने) की अवधि को माना जाता है।
- भारत में दक्षिण-पश्चिम मानसून की शुरुआत आमतौर पर गर्मियों के मौसम में तिब्बत के पठार पर होने वाली अत्यधिक गर्मी के कारण होता है।
- तिब्बत के पत्थर पर होने वाली गर्मी के कारण चलने वाली गर्म हवाएं हिंद महासागर के दक्षिण में कम दबाव बनाती हैं तथा जब ये दक्षिण पश्चिमी हवाएं भूमध्य रेखा को पार करती हैं तो यह दो भागों में विभाजित होकर अरब सागर और बंगाल की खाड़ी के ऊपर से गुजरती हैं।
- यही दक्षिणी पश्चिमी हवाएं जब पश्चिमी घाट से टकराती हैं तो केरल में बारिश कराने के साथ, भारत में दक्षिण पश्चिम मानसून की शुरुआत कराती हैं।
- हालांकि दक्षिण-पश्चिम मानसून के दौरान तमिलनाडु का तट में ज्यादा बारिश नहीं होती है क्योंकि तमिलनाडु में वर्षा के जिम्मेदार उत्तर पूर्वी व्यापारिक हवा यहां सर्दियों में बारिश कराती हैं।

- दक्षिण-पश्चिम मानसून भारत की कुल वर्षा का लगभग 80-90% वर्षा कराने में योगदान देती है।

### पूर्वोत्तर मानसून -

- उत्तर पूर्व मानसून मुख्य रूप से सर्दियों में साइबेरिया और तिब्बती पठार पर उच्च दबाव के निर्माण के कारण उत्पन्न होता है।
- पूर्वोत्तर मानसून के दौरान साइबेरिया और तिब्बती पठार से बहने वाली सर्द हवा समुद्र से जमीन की ओर बहती है जो अपने साथ भारी मात्रा में हिंद महासागर से नमी लाकर दक्षिण भारत में बारिश कराती है।
- पूर्वोत्तर मानसून दक्षिण भारत में आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक तथा पुदुचेरी में अक्टूबर से दिसंबर महीने में बारिश कराती है।
- पूर्वोत्तर मानसून दक्षिण भारत में आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक तथा पुदुचेरी में अक्टूबर से दिसंबर महीने में बारिश कराती है।
- पूर्वोत्तर मानसून के दौरान अकेले तमिलनाडु के कुल वार्षिक वर्षा का 48 प्रतिशत वर्षा होती है।

### सामान्य से अधिक बारिश वाले क्षेत्र -

- भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार इस मानसून सीजन में भारत के मध्य और दक्षिण प्रायद्विपीय क्षेत्रों में सामान्य से अधिक बारिश का अनुमान लगाया गया है।
- सामान्य से अधिक वर्षा वाले राज्यों में मध्य प्रदेश, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल शामिल हैं।

### अन्य क्षेत्रों में वर्षा का अनुमान -

- भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार भारत के उत्तर पश्चिम भाग में सामान्य बारिश होने का अनुमान लगाया गया है।
- हालांकि मौसम विज्ञान विभाग द्वारा भारत के पूर्वोत्तर भाग में सामान्य से कम बारिश का अनुमान लगाया गया है।

### भारत के लिए मानसून का महत्व -

- भारत की कृषि आधारित अर्थव्यवस्था में मानसून अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है।
- देश की कुल कृषि योग्य भूमि का लगभग 52% सिंचाई के लिए मानसून की बारिश पर निर्भर है।
- भारत में मानसून यहां के खरीफ फसलों चावल, मक्का, सोयाबीन, गन्ना तथा कपास की बुवाई के लिए काफी महत्वपूर्ण है।

- अच्छे मानसून से उपरोक्त फसलों की पैदावार बढ़ती है जो देश की आर्थिक परिदृश्य को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
- अच्छे मानसून सीजन के कारण कृषि उत्पादन में वृद्धि होती है जिससे खाद्य वस्तुओं की कीमतें नियंत्रण में रहती है।
- इसके विपरीत खराब मानसून के कारण सरकार को सिंचाई के लिए सब्सिडी तथा कृषि ऋण को माफ करने के लिए मजबूर करता है जो राजकोषीय घाटा को बढ़ाकर अर्थव्यवस्था को कमजोर करता है।

### जल भंडारण और जल विद्युत उत्पादन पर प्रभाव -

- अच्छा मानसून देश की जल भंडारण क्षमता और जल विद्युत उत्पादन को बढ़ाने में मददगार साबित होता है।
- केंद्रीय जल आयोग के अनुसार वर्तमान में भारत के 150 प्रमुख जलाशयों में इनकी कुल भंडारण क्षमता का मात्र 24% ही जल रह गया है जो देश में जल संकट और जल विद्युत उत्पादन को प्रभावित करता है।

### एल नीनो और ला नीनो का मानसून पर प्रभाव -

- एल नीनो और ला नीनो बेहद जटिल मौसमी पैटर्न है जो विषुवतीय क्षेत्र के प्रशांत महासागरीय क्षेत्र में समुद्र जल के तापमान में उत्पन्न भिन्नता से घटित होता है।
- अल नीनो की स्थिति में पूर्वी विषुवतीय प्रशांत क्षेत्र में समुद्र का जल असमान्य रूप से गर्म हो जाता है जो भारत में कमजोर मानसूनी हवाओं और शुष्क परिस्थितियों के लिए जिम्मेदार होता है।
- ला नीनो की स्थिति में पूर्वी विषुवतीय प्रशांत महासागरीय क्षेत्र में समुद्र का जल असमान्य रूप से ठंडा हो जाता है जो भारत में मानसून के दौरान सामान्य से अधिक बारिश के लिए जिम्मेदार है।
- अल नीनो की घटना ला नीनो की तुलना में ज्यादा बार घटित होता है जो अल्प समय के लिए भी हो सकता है।
- जबकि ला नीनो की घटना 1 से 3 वर्ष तक लगातार प्रभावित बना रहता है।
- भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के डेटा के अनुसार भारत में मानसून के मौसम में सामान्य से अधिक बारिश तब हुई जब ला नीना के बाद अल नीनो की घटना हुई।

### भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (IMD)

- भारतीय मौसम विज्ञान विभाग, (IMD) भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के अंतर्गत आता है जो मौसम विज्ञान प्रेक्षण, मौसम पूर्वानुमान और भूकंप विज्ञान के क्षेत्र में कार्य करती है।
- गठन - 1875
- मुख्यालय - नई दिल्ली